CORDOVA For Teachers Only

FREE SMART CLASS SOFTWARE WITH WEB SUPPORT
For Teachers Only

सुगम हिंदी व्याकरण

CORDOVA®

विषय-सूची (Contents)

	विषय		पृष्ठ संख्या
1.	भाषा, लिपि और व्याकरण	(Language, Script and Grammar)	5
2.	वर्ण-विचार	(Orthography/Phonology)	11
3.	संधि	(Joining)	20
4.	शब्द-विचार	(Morphology)	26
5.	अनेक शब्दों के लिए एक शब्द	(One Word Substitution)	34
6.	पर्यायवाची शब्द	(Synonyms)	38
7.	श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द	(Paironyms)	42
8.	अनेकार्थक शब्द	(Homonyms)	45
9.	विलोम शब्द	(Antonyms)	48
10.	उपसर्ग	(Prefix)	52
11.	प्रत्यय	(Suffix)	58
12.	समास	(Compound)	62
13.	संज्ञा	(Noun)	70
14.	लिंग	(Gender)	76
15.	वचन	(Number)	81
16.	कारक	(Case)	87
17.	सर्वनाम	(Pronoun)	93
18.	विशेषण	(Adjective)	100
19.	क्रिया	(Verb)	109
20.	काल	(Tense)	115
	विशेष गतिविधि	(Fun Activity)	120
21.	अविकारी शब्द (अव्यय) -	(Indeclinable Words)	122
	क्रियाविशेषण	(Adverb)	122
	संबंधबोधक	(Preposition)	128
	समुच्चयबोधक (योजक)	(Conjunction)	131
	विस्मयादिबोधक	(Interjection)	134
22.	वाक्य-रचना	(Syntax)	137
23.	अशुद्ध शब्दों और वाक्यों को शुद्ध करना	(Correction of Incorrect Words and Sentences)	143
24.	विराम-चिह्न	(Punctuation)	149
25.	मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ	(Idioms and Proverbs)	154
26.	डायरी-लेखन	(Diary Writing)	162
27.	चित्र-वर्णन	(Picture Description)	164
28.	संवाद-लेखन	(Dialogue Writing)	166
29.	विज्ञापन-लेखन	(Advertisement Writing)	168
30.	सूचना-लेखन	(Notice Writing)	170
31.	श्रुतभाव-ग्रहण	(Listening Comprehension)	172
32.	कहानी-लेखन	(Story Writing)	173
33.	पत्र-लेखन	(Letter Writing)	177
34.	अनुच्छेद-लेखन	(Paragraph Writing)	183
35.	निबंध-लेखन	(Essay Writing)	187
36.	अपठित गद्यांश	(Unseen Passage)	194
37.	अपठित पद्यांश	(Unseen Extract)	198
38.	शब्दकोश	(Dictionary Skill)	201
	परिभाषाएँ	(Definitions)	203
	श्रुतभाव-पाठ	(Listening Text)	205
	रचनात्मक गतिविधि–I-II, अभ्यास प्रश्न-पत्र–I		206–209
	रचनात्मक गतिविधि–III-IV		210
	अभ्यास प्रश्न-पत्र–II		211–212

Scanned with CamScanner

भाषा, लिपि और व्याकरण
(Language, Script and Grammar)

बच्चे कक्षा पाँच से कक्षा छह में आ गए हैं। नए जोश और नई किताबों के साथ बच्चों का नई कक्षा में आज पहला दिन है–

कक्षा में अध्यापिका मुस्कराती हुई आती हैं और सभी बच्चों से **बोलकर** उनका नाम पूछती हैं तथा सभी बच्चे **सुनकर** अपना-अपना नाम बताते हैं।

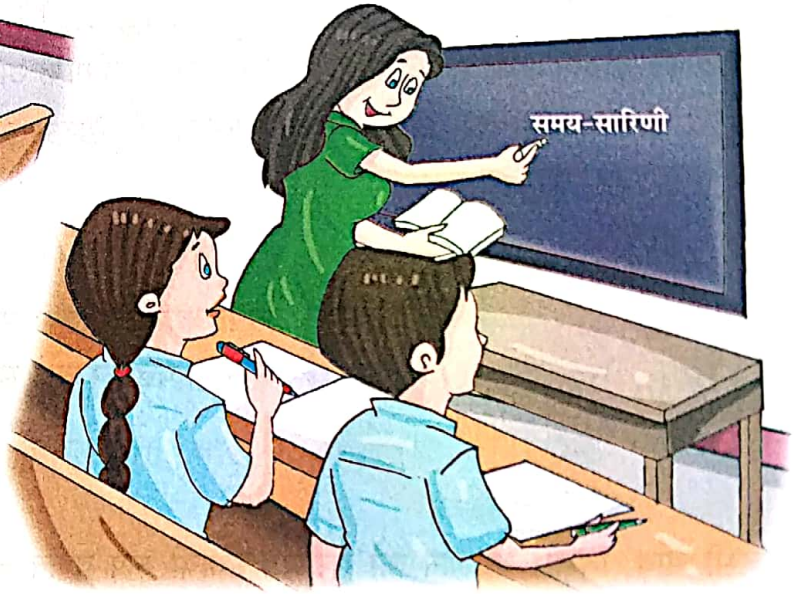

उसके बाद अध्यापिका श्यामपट्ट (Black-board) पर समय-सारिणी (Time-table) **लिखकर** बच्चों से डायरी में लिखने के लिए कहती हैं। बच्चे **पढ़कर** तथा **समझकर** समय-सारिणी अपनी डायरी में लिखते हैं।

आपने ध्यान दिया कि उपर्युक्त वाक्यों में अध्यापिका और बच्चे **बोलकर**, **सुनकर**, **लिखकर** तथा **पढ़कर** अपने मन के भावों को एक-दूसरे तक पहुँचा रहे हैं; यही प्रक्रिया **भाषा** कहलाती है।

अत: हम कह सकते हैं कि–

मन के भावों तथा विचारों का आदान-प्रदान करना ही भाषा है।

भाषा के दो रूप होते हैं–

भाषा के रूप

1. मौखिक भाषा (मुख द्वारा)
2. लिखित भाषा (लेखन द्वारा)

Scanned with CamScanner

1. मौखिक भाषा– मुख से **बोलकर** अपने मन के भावों को प्रकट करना तथा **सुनकर** दूसरों के मन के भावों को समझना ही **मौखिक भाषा** है; जैसे–

भाषा का मौखिक रूप प्राचीनतम है। यह रूप सहज होता है और इसका प्रयोग **व्यापक रूप** में किया जाता है।

2. लिखित भाषा– अपने मन के भावों को **लिखकर** प्रकट करना तथा दूसरे के मन के भावों को **पढ़कर** समझना ही **लिखित भाषा** है; जैसे–

सनी कंप्यूटर पर समय-सारिणी **लिखकर** ई-मेल करता है और उसका दोस्त राहुल ई-मेल **पढ़कर** उसे समझता है तथा अपने दोस्त को धन्यवाद देता है।

किसी भाव, विचार या ज्ञान को सुरक्षित स्थायी रूप प्रदान करने के लिए लिखित भाषा का प्रयोग किया जाता है। यह रूप मौखिक रूप की अपेक्षा **सीमित** होता है।

सांकेतिक भाषा– बच्चो, आपने चौराहे पर ट्रैफ़िक लाइट देखी होगी और ध्यान दिया होगा कि लाल बत्ती के जलने पर गाड़ियाँ रुक जाती हैं और हरी बत्ती के जलने पर गाड़ियाँ चलने लगती हैं, ये सभी संकेत हैं। इस प्रकार की भाषा **सांकेतिक भाषा** कहलाती है। कई बार संकेतों के द्वारा हम अपनी बात दूसरों तक पहुँचाते हैं; जैसे– मुँह पर उँगली रखकर चुप रहने का इशारा करना, हाथ हिलाकर बॉय (Bye) करने का इशारा आदि। लेकिन हमेशा संकेतों के द्वारा अपनी बात कही व समझाई नहीं जा सकती है। इसके लिए हमें मौखिक और लिखित भाषा की मदद लेनी पड़ती है। इसलिए सांकेतिक रूप को भाषा की मान्य श्रेणी में नहीं रखा जाता है।

Scanned with CamScanner

मातृभाषा– 'मातृभाषा' शब्द का शाब्दिक अर्थ है– मातृ (माता) की भाषा। मातृभाषा से तात्पर्य उस भाषा से है, जिसे बच्चा शैशवावस्था में सबसे पहले अपनी माँ से सीखता है। बच्चा जिस परिवार में रहता है, बड़ा होता है, उस परिवार के सदस्यों की भाषा को अपनाता है और सबसे पहले उसी भाषा को सीखता है। यही भाषा उसकी **मातृभाषा** कहलाती है।

बोली– बोली मौखिक भाषा का वह स्थानीय रूप है, जो किसी विशेष क्षेत्र या स्थान में बोली जाती है; जैसे–हरियाणा में हरियाणवी, कुमाऊँ में कुमाऊँनी, छत्तीसगढ़ में छत्तीसगढ़ी, बुंदेलखंड में बुंदेलखंडी आदि। बोली का प्रयोग केवल बोलचाल में ही किया जाता है।

अत: हम कह सकते हैं कि–

क्षेत्र विशेष में बोली जाने वाली मौखिक भाषा ही बोली कहलाती है।

भाषा और बोली में अंतर– भाषा का क्षेत्र व्यापक होता है, जबकि बोली का क्षेत्र सीमित होता है। भाषा में साहित्य रचना एवं ज्ञान का संग्रह होता है। बोली का साहित्य कथा, किंवदंतियों और लोकोक्तियों तक ही सीमित रहता है।

राष्ट्रभाषा– जिस भाषा का प्रयोग पूरे राष्ट्र में होता है, उसे **राष्ट्रभाषा** कहते हैं। भारत की राष्ट्रभाषा **हिंदी** है। भारतीय संविधान के अनुसार **14 सितंबर, 1949** को अनुच्छेद 343 के तहत हिंदी भाषा को भारत की **राष्ट्रभाषा** के रूप में स्वीकार किया गया था। इसलिए प्रत्येक वर्ष **14 सितंबर** को **हिंदी दिवस** मनाया जाता है।

विशेष

विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में हिंदी भाषा का दूसरा स्थान है।

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है, जो इस प्रकार हैं–

1. हिंदी 2. पंजाबी 3. उर्दू 4. डोगरी 5. कोंकणी 6. मराठी 7. गुजराती 8. ओडिया 9. असमिया 10. बंगाली 11. कश्मीरी 12. मलयालम 13. कन्नड़ 14. तेलुगू 15. तमिल 16. बोडो 17. संथाली 18. नेपाली 19. मैथिली 20. सिंधी 21. संस्कृत 22. मणिपुरी

लिपि

मनुष्य ने जब भाषा का विकास करना आरंभ किया, तब उसे ध्वनियों को निश्चित रूप देने की ज़रूरत महसूस हुई। फिर उसने ध्वनियों को चिह्नों के रूप देने शुरू कर दिए, जो **लिपि** कहलाती है।

प्रत्येक भाषा के लिखने की व्यवस्था या लिपि अलग-अलग होती है; जैसे–हिंदी जिस रूप में लिखी जाती है, अंग्रेज़ी वैसी नहीं लिखी जाती। हिंदी की लिपि देवनागरी है, तो अंग्रेज़ी की रोमन। देवनागरी लिपि में भारत की कई भाषाएँ–हिंदी, संस्कृत, कोंकणी, नेपाली, मराठी, मैथिली, बोडो आदि लिखी जाती हैं। इसी प्रकार रोमन लिपि में भी विश्व की कई भाषाएँ–अंग्रेज़ी, फ्रेंच, स्पेनिश, जर्मन आदि लिखी जाती हैं।

कुछ अन्य लिपियाँ इस प्रकार हैं–उर्दू की फ़ारसी, पंजाबी की गुरुमुखी, बंगाली की बाँग्ला आदि।

अत: हम कह सकते हैं कि–

भाषा के लिखने के चिह्नों का व्यवस्थित रूप ही लिपि कहलाती है।

Scanned with CamScanner

विशेष

भाषा मुख्य रूप से मौखिक होती है, लिखने के ढंग का विकास बाद में हुआ है।

व्याकरण

अकसर बच्चे इस तरह के वाक्यों का प्रयोग करते हैं, लेकिन यह भाषा अशुद्ध है। व्याकरण के सही ज्ञान के अभाव में हमें भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान नहीं हो सकता, क्योंकि भाषा को शुद्ध रूप में बोलने, लिखने, पढ़ने आदि का ज्ञान व्याकरण ही कराता है। व्याकरण के माध्यम से ही भाषा की एकरूपता को बनाए रखा जाता है।

अत: हम कह सकते हैं कि–

व्याकरण वह शास्त्र है जिसके नियमों के द्वारा हम शुद्ध बोलना, लिखना तथा पढ़ना सीखते हैं। अर्थात व्याकरण भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान कराता है।

व्याकरण के अंग– व्याकरण के तीन अंग होते हैं– 1. वर्ण-विचार 2. शब्द-विचार 3. वाक्य-विचार

1. **वर्ण-विचार–** इसके अंतर्गत वर्णों के बारे में विचार किया जाता है।
2. **शब्द-विचार–** इसके अंतर्गत शब्दों के विषय में विचार किया जाता है।
3. **वाक्य-विचार–** इसके अंतर्गत वाक्यों के विषय में विचार किया जाता है।

आओ पाठ दोहराएँ

कौशल-पठन (उच्चारण, अबोध-भाषण)

- मन के भावों तथा विचारों को प्रकट करने का साधन ही **भाषा** है।
- मुख से **बोलकर** अपने मन के भावों को प्रकट करना तथा **सुनकर** दूसरे के भावों को समझना **मौखिक भाषा** है।
- **लिखकर** अपने मन के भावों को प्रकट करना तथा **पढ़कर** दूसरे के मन के भावों को समझना **लिखित भाषा** है।
- सांकेतिक भाषा की गणना व्याकरण में नहीं की जाती है।
- किसी विशेष क्षेत्र या स्थान में बोली जाने वाली भाषा को **बोली** कहते हैं।
- 14 सितंबर, 1949 को भारत की **राष्ट्रभाषा** के रूप में हिंदी को मान्यता मिली थी।
- भाषा के लिखने के चिह्नों के व्यवस्थित रूप को **लिपि** कहते हैं।
- व्याकरण भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान कराता है।
- व्याकरण के अंग–1. वर्ण-विचार 2. शब्द-विचार 3. वाक्य-विचार

Scanned with CamScanner

अभ्यास

मौखिक

कौशल-वाचन (बोध, संवाद)

1. आप घर में जिस भाषा का प्रयोग करते हैं, उस भाषा में कोई पाँच वाक्य बोलिए।
2. भारतीय संविधान में कितनी भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है?

लिखित

कौशल-लेखन (व्याकरण, शब्दावली, लिखावट)

1. निम्नलिखित वाक्यों में ✓ या ✗ निशान लगाइए-

(क) मन के भावों को केवल बोलकर प्रकट किया जा सकता है। ◯

(ख) भाषा के दो रूप होते हैं। ◯

(ग) सांकेतिक भाषा की गणना व्याकरण में की जाती है। ◯

(घ) मौखिक भाषा, भाषा का स्थायी रूप है। ◯

(ङ) भाषा और बोली में अंतर होता है। ◯

(च) भारतीय संविधान में 18 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। ◯

(छ) लिखने के व्यवस्थित चिह्नों को लिपि कहते हैं। ◯

(ज) व्याकरण के दो अंग होते हैं। ◯

2. निम्नलिखित क्रियाओं में भाषा का कौन-सा रूप प्रयोग होता है? ✓ निशान लगाकर बताइए-

(क) रेडियो से गाना सुनना	–	मौखिक भाषा	◯	लिखित भाषा	◯
(ख) पत्र लिखना	–	मौखिक भाषा	◯	लिखित भाषा	◯
(ग) वाद-विवाद प्रतियोगिता में बोलना	–	मौखिक भाषा	◯	लिखित भाषा	◯
(घ) दादी का कहानी सुनाना	–	मौखिक भाषा	◯	लिखित भाषा	◯
(ङ) ई-मेल करना	–	मौखिक भाषा	◯	लिखित भाषा	◯
(च) एस०एम०एस० करना	–	मौखिक भाषा	◯	लिखित भाषा	◯

3. निम्नलिखित भाषाएँ किन प्रदेशों में बोली जाती हैं? मिलान कीजिए-

	भाषा	प्रदेश
(क)	कश्मीरी	केरल
(ख)	तमिल	पश्चिम बंगाल
(ग)	पंजाबी	जम्मू-कश्मीर
(घ)	बंगाली	तमिलनाडु
(ङ)	गुजराती	पंजाब
(च)	मलयालम	गुजरात

Scanned with CamScanner

4. ऐसी कोई चार भाषाएँ लिखिए, जो देवनागरी लिपि में लिखी जाती हैं।

....

5. दिए गए शब्दों को उचित स्थान में भरकर वाक्य पूरे कीजिए-

(क) जो भाषा बोलकर प्रकट की जाए, उसे ..... भाषा कहते हैं।

(ख) जब कोई संकेत के माध्यम से कुछ समझाता है, तो उसे ..... भाषा कहा जाता है।

(ग) प्रत्येक वर्ष ..... को हिंदी दिवस मनाते हैं।

(घ) प्रत्येक भाषा के लिखने की ..... अलग-अलग होती है।

(ङ) भाषा की शुद्धता का ज्ञान हमें ..... कराता है।

(च) अंग्रेज़ी की लिपि ..... है।

(छ) भारत की राष्ट्रभाषा ..... है।

(ज) व्याकरण के अंग वर्ण-विचार, ... और वाक्य-विचार होते हैं।

सांकेतिक
लिपि
मौखिक
शब्द-विचार
हिंदी
व्याकरण
14 सितंबर
रोमन

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) भाषा किसे कहते हैं?

(ख) भाषा के मौखिक और लिखित रूप में क्या अंतर है?

(ग) बोली और भाषा में अंतर स्पष्ट कीजिए।

(घ) व्याकरण से आप क्या समझते हैं?

मूल्यपरक प्रश्न

7. यह तो आप जानते ही हैं कि हमारी संस्कृति अनेकता में एकता का जीता जागता उदाहरण है। मान लीजिए आप कक्षा के मॉनीटर हैं और आप चाहते हैं कि कक्षा के सभी बच्चे मिल-जुल कर रहें। इसके लिए आप क्या करेंगे?

गतिविधि

रचनात्मक-लेखन (विचार, भाव, लिखावट)

- अधिकतर लोग भाषा और बोली के अंतर में भ्रमित हो जाते हैं। अत: अध्यापिका की मदद से एक-एक बच्चा खड़ा होकर बोली या भाषा का नाम बोले और अन्य बच्चों से पूछे कि ये भाषा है या बोली।
- अपनी कक्षा के सभी बच्चों के नामों की सूची बनाइए तथा पता लगाकर लिखिए कि वे कौन-कौन-सी भाषाएँ बोल सकते हैं? 'मेरा भारत महान' इस वाक्य को उन्हीं भाषाओं में लिखवाइए।

- इसे भी पढ़िए-

वाक्य में शब्द का
शब्द में वर्ण का
वर्ण में ध्वनि का
भाषा में व्याकरण का
अपना अलग ही महत्त्व है।

Scanned with CamScanner

2

वर्ण-विचार

(Orthography/Phonology)

देखिए, पढ़िए और समझिए

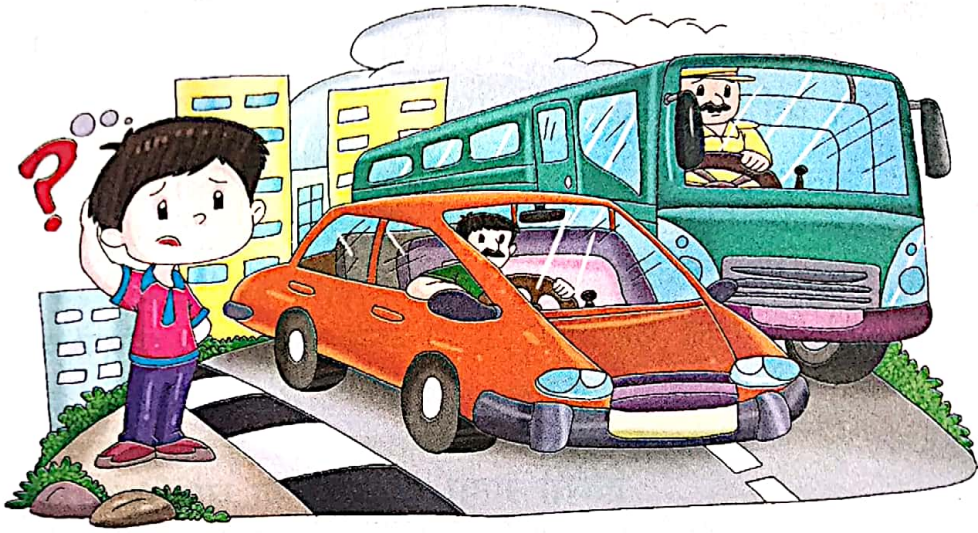

बच्चो, आपने सड़क पर चलते समय कार, बस, स्कूटर आदि वाहनों से निकली ध्वनियों को जरूर सुना होगा और पहचानते भी होंगे। क्या आप वाहनों से निकली ध्वनियों का अर्थ बता सकते हैं? नहीं, न! क्यों? क्योंकि इन ध्वनियों का कोई अर्थ नहीं होता है। जब मनुष्य कुछ बोलता है, तब उसके मुख से कुछ ध्वनियाँ भी निकलती हैं और इन ध्वनियों का कुछ अर्थ भी होता है; जैसे–

तुम इधर आओ। इस वाक्य के प्रत्येक शब्द के खंड करके देखिए–

तुम – त् + उ + म् + अ (इसमें चार ध्वनियाँ हैं।)

इधर – इ + ध् + अ + र् + अ (इसमें पाँच ध्वनियाँ हैं।)

आओ – आ + ओ (इसमें दो ध्वनियाँ हैं।)

ऊपर दिए गए खंडों के और टुकड़े नहीं किए जा सकते हैं। व्याकरण में ऐसी ध्वनियों को **वर्ण** कहते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि–

> **भाषा में प्रयुक्त ध्वनि जिनके और खंड (टुकड़े) नहीं किए जा सकते, उन्हें वर्ण या अक्षर कहते हैं।**

वर्णमाला

प्रत्येक भाषा की अपनी वर्णमाला होती है, जिसमें उस भाषा के वर्णों को एक निश्चित क्रम में रखा जाता है।

हिंदी भाषा की वर्णमाला इस तरह हैं–

स्वर →

अ आ इ ई उ ऊ

ऋ ए ऐ ओ औ

Scanned with CamScanner

व्यंजन →

क वर्ग –	क	ख	ग	घ	ङ
च वर्ग –	च	छ	ज	झ	ञ
ट वर्ग –	ट	ठ	ड	ढ	ण
त वर्ग –	त	थ	द	ध	न
प वर्ग –	प	फ	ब	भ	म
अंत:स्थ –	य	र	ल	व	
ऊष्म –	श	ष	स	ह	

(ङ, ञ, ण, न, म) → पंचम वर्ण

अन्य: ड़ ढ़

संयुक्त व्यंजन: क्ष त्र ज्ञ श्र

हिंदी में व्यंजनों की संख्या 33 है। अन्य तथा संयुक्त व्यंजनों को मिलाकर ये 39 होते हैं।

अत: हम कह सकते हैं कि–

किसी भाषा के वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं।

हिंदी में वर्ण दो प्रकार के होते हैं–

1. स्वर (Vowel)

जिन वर्णों के उच्चारण में किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं लेनी पड़ती, उन्हें **स्वर** कहते हैं। स्वरों का उच्चारण करते समय हवा मुख से बिना किसी रुकावट के बाहर निकलती है।

हिंदी में स्वरों की संख्या ग्यारह (11) होती है– **अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।**

विशेष

'आ' और **'औ'** के बीच की ध्वनि **ऑ** भी प्रयोग की जा रही है। इसलिए इसे स्वरों में शामिल कर लिया गया है; जैसे–कॉलेज, डॉक्टर आदि।

स्वर के तीन भेद होते हैं–

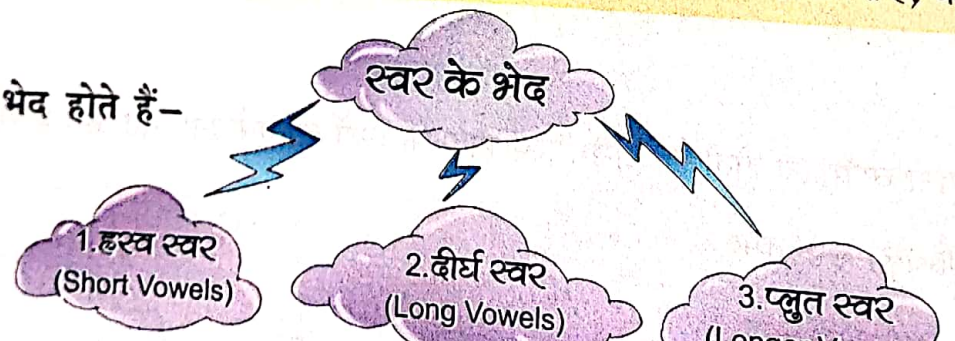

(1) ह्रस्व स्वर (Short Vowels)– जिन स्वरों के उच्चारण में सबसे कम समय लगता है, उन्हें **ह्रस्व स्वर** कहते हैं। ह्रस्व स्वर चार होते हैं–**अ, इ, उ, ऋ।**

Scanned with CamScanner

(2) दीर्घ स्वर (Long Vowels)– जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से दोगुना समय लगता है, उन्हें **दीर्घ स्वर** कहते हैं। दीर्घ स्वर सात होते हैं–**आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।**

विशेष

ऑ को मिलाकर अब दीर्घ स्वर आठ हो गए हैं।

(3) प्लुत स्वर (Longer Vowels)– जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से तीन गुना समय लगता है, उन्हें **प्लुत स्वर** कहते हैं; जैसे–ओ३म् ।

स्वरों के मात्रा-चिह्न (Vowel Sign)

स्वरों के मात्रा-चिह्न निश्चित होते हैं। व्यंजन स्वरों की सहायता से ही बोले जाते हैं। स्वरों का प्रयोग जब व्यंजनों के साथ किया जाता है, तब स्वरों का रूप बदल जाता है। उनके मूल स्वरूप के स्थान पर कुछ चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। इन्हीं चिह्नों को **मात्रा** कहते हैं।

स्वरों की मात्राएँ

स्वर	मात्रा	मात्रा सहित व्यंजन	शब्द
अ	मात्रा नहीं होती	क् + अ = क	कमल
आ	ा	क् + ा = का	कान
इ	ि	क् + ि = कि	किताब
ई	ी	क् + ी = की	कील
उ	ु	क् + ु = कु	कुल
ऊ	ू	क् + ू = कू	कूलर
ऋ	ृ	क् + ृ = कृ	कृषक
ए	े	क् + े = के	केला
ऐ	ै	क् + ै = कै	कैसा
ओ	ो	क् + ो = को	कोयल
औ	ौ	क् + ौ = कौ	कौवा

विशेष

- स्वरों को स्वतंत्र या मूल रूप में प्रयोग किया जा सकता है; जैसे– आओ, आई, आइए आदि।
- 'अ' स्वर प्रत्येक व्यंजन में निहित होता है। इसकी अलग से कोई मात्रा नहीं होती है।
- स्वर रहित व्यंजन दिखाने के लिए हलंत (्) का प्रयोग होता है। इसका सामान्य अर्थ है कि व्यंजन आधा है।

Scanned with CamScanner

- 'ऋ' स्वर का उच्चारण 'रि' की तरह होता है।
- 'ऋ' की मात्रा प्रायः वर्णों के पैरों के नीचे लगाई जाती है; जैसे– कृ, गृ आदि।
- 'र' के साथ 'उ' और 'ऊ' की मात्रा उसके ऊपर-नीचे नहीं, बल्कि 'र' के पेट में लगाई जाती है। इस प्रकार–

र + ु = रु = रुपया र + ू = रू = रूप

अयोगवाह– 'अं' और 'अः' ये दोनों ध्वनियाँ न तो स्वर हैं और न व्यंजन। इन्हें **अयोगवाह** कहा जाता है।

अनुस्वार (ं)– अनुस्वार का उच्चारण नाक से होता है। व्यंजनों के वर्ग (क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, प वर्ग) के पंचमाक्षर (अंतिम वर्ण) की जगह पर इसका प्रयोग होता है। ऐसे प्रयोग के समय यह केवल बिंदु स्वरूप (ं) होता है; जैसे–गंगा, चंचल, संभव आदि।

अनुनासिक/चंद्रबिंदु (ँ)– अनुनासिक का उच्चारण नाक और मुँह से होता है; जैसे– चाँद, मुँह, हँस आदि।

विसर्ग (:)– विसर्ग का प्रयोग उच्चारण के समय व्यंजन के साथ 'ह्' की ध्वनि देता है। प्रयोग के समय इसका स्वरूप दो बिंदु (:) के रूप में होता है। इसका प्रयोग प्रायः शब्द के अंत में किया जाता है। इसे **विसर्ग** कहते हैं। जैसे–अतः, प्रातः आदि।

2. व्यंजन (Consonant)

जिन वर्णों का उच्चारण करते समय स्वर की सहायता ली जाती है, उन्हें **व्यंजन** कहते हैं। इनके उच्चारण में हवा रुककर मुख से बाहर निकलती है। स्वर ही सहायता के बिना हम व्यंजन वर्ण को लिख तो सकते हैं; जैसे– क्, ख्, ग् आदि। लेकिन उच्चारित नहीं कर सकते।

व्यंजन के तीन भेद होते हैं–

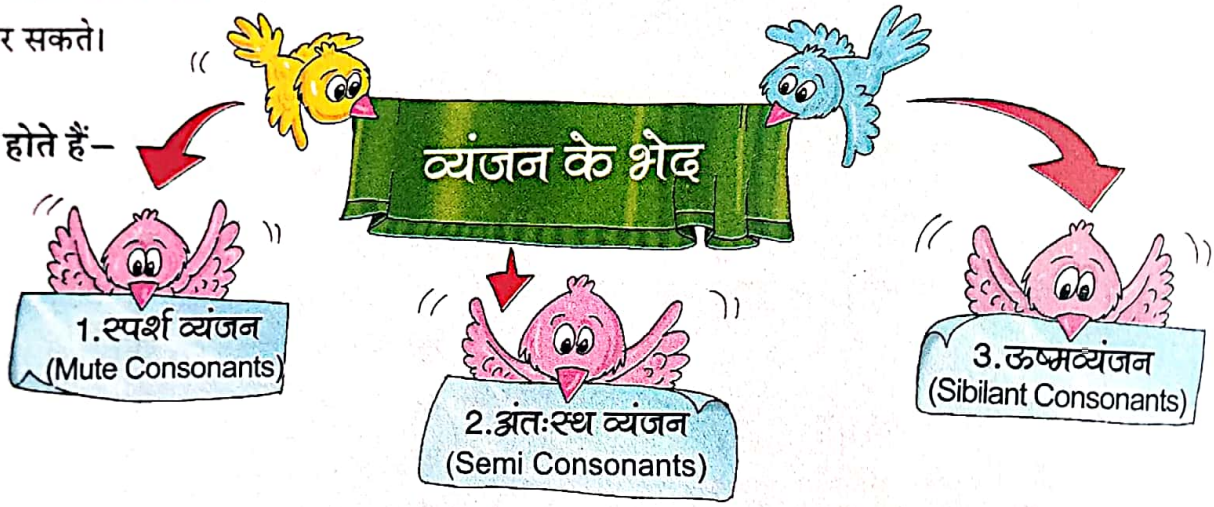

(1) स्पर्श व्यंजन (Mute Consonants)– स्पर्श व्यंजनों में जिह्वा (जीभ) मुख के विभिन्न स्थानों को स्पर्श करती है, इसलिए इन्हें **स्पर्श व्यंजन** कहते हैं।

स्पर्श व्यंजन संख्या में 25 (पच्चीस) होते हैं–

वर्ग	व्यंजन	उच्चारण-स्थान
क वर्ग	क ख ग घ ङ	कंठ
च वर्ग	च छ ज झ ञ	तालु
ट वर्ग	ट ठ ड ढ ण	मूर्धा
त वर्ग	त थ द ध न	दाँत
प वर्ग	प फ ब भ म	होंठ

Scanned with CamScanner

विशेष

ड़ और ढ़ भी स्पर्श व्यंजन हैं। इनका उच्चारण स्थान ड और ढ के समान मूर्धा है।

(2) अंत:स्थ व्यंजन (Semi Consonants)– स्वर तथा व्यंजन के बीच में स्थित होने के कारण इन्हें अंत:स्थ कहा जाता है। जिनके उच्चारण में जीभ मुँह के किसी भाग को पूरी तरह स्पर्श नहीं करती, उन्हें **अंत:स्थ व्यंजन** कहते हैं।

अंत:स्थ व्यंजन संख्या में चार होते हैं– **य, र, ल, व।**

(3) ऊष्म व्यंजन (Sibilant Consonants)– ऊष्म व्यंजन के उच्चारण में श्वास के तेज़ी से बाहर निकलने के कारण मुख में ऊष्मा (गरमी) पैदा होती है, इसलिए इन्हें **ऊष्म व्यंजन** कहते हैं।

ऊष्म व्यंजन चार होते हैं– **श, ष, स, ह।**

उपर्युक्त व्यंजनों के अतिरिक्त भी व्यंजन हैं, जो स्वतंत्र नहीं हैं। बल्कि अन्य व्यंजनों से मिलकर बने हैं–

(i) संयुक्त व्यंजन– एक से अधिक व्यंजनों के मेल से बनने वाले व्यंजन **संयुक्त व्यंजन** कहलाते हैं। संयुक्त व्यंजन मुख्य रूप से चार होते हैं– क्ष, त्र, ज्ञ, श्र।

क् + ष् + अ = क्ष – कक्षा

त् + र् + अ = त्र – त्रिशूल

ज् + ञ् + अ = ज्ञ – ज्ञानी

श् + र् + अ = श्र – श्रम

(ii) द्वित्व व्यंजन– जब एक ही व्यंजन का दो बार (पहली बार बिना स्वर के) प्रयोग किया जाता है, तो उसे **द्वित्व व्यंजन** कहा जाता है। इसमें पहला व्यंजन स्वर रहित और दूसरा स्वर सहित होता है; जैसे–

पत्ती = त्त (त्त) द्वित्व व्यंजन

बच्चा = च्च (च्च) द्वित्व व्यंजन

खट्टी = ट्ट (ट्ट) द्वित्व व्यंजन

पक्का = क्क (क्क) द्वित्व व्यंजन

(iii) संयुक्ताक्षर– जब स्वर रहित व्यंजन का अपने से अलग स्वर सहित व्यंजन से मेल होता है, तब वह **संयुक्ताक्षर** कहलाता है; जैसे– स्वस्थ, विद्या, आदि।

लेखन विधि

1. हलंत (्) लगाकर– बिना पाई (।) वाले व्यंजनों में हलंत (्) लगाकर उनका 'अ' रहित रूप लिखा जाता है। जैसे– बुद्धिमान, विद्यालय आदि।

2. पाई हटाकर– बिना पाई वाले व्यंजनों को दूसरे व्यंजन के साथ जोड़कर लिखना; जैसे– अच्छा, संख्या, विश्व आदि।

Scanned with CamScanner

3. **घुंडी हटाकर–** क्, फ् जैसे व्यंजनों के आकार में घुंडी को हटाकर लिखा जाता है; जैसे– मक्कार, दफ़्तर, पक्का आदि।

'र' के विभिन्न रूप

'र' एक ऐसा व्यंजन है जिसकी मात्रा और स्वर रहित रूप अन्य व्यंजनों से अलग होता है। अतः इसके प्रयोग में कुछ विशेष बातों का ध्यान रखना चाहिए–

1. स्वर रहित व्यंजनों के साथ 'र' का प्रयोग उन व्यंजनों के नीचे किया जाता है; जैसे– प्र, द्र, ट्र आदि।
2. स्वर रहित 'र्' का प्रयोग अगले अक्षर के शीर्ष पर किया जाता है; जैसे– गर्म, सर्द, पर्व आदि।
3. 'उ' मात्रा के साथ 'र' होने पर मात्रा नीचे न लगकर 'र' के मध्य की घुंडी के साथ लगती है; जैसे–रुपया, रुचि आदि।
4. 'ऊ' मात्रा हो तो मात्रा के साथ गोल घुंडी बनती है; जैसे–रूप, रूठना आदि।
5. 'श्' के साथ 'र' हो तो 'श्र' बन जाता है; जैसे– श्रम, श्री, श्रवण आदि।
6. 'स्' के साथ 'र' हो तो 'स्र' बनता है; जैसे– स्रोत, स्राव आदि।
7. स् + त्र् + अ को 'स्त्र' रूप में लिखा जाता है; जैसे–स्त्री, वस्त्र, अस्त्र आदि।
8. 'त्र' त् + र् + अ के योग से बना है।

नुक्ता– उर्दू तथा फ़ारसी से आए शब्दों में क़, ख़, ग़, ज़, फ़ के नीचे एक बिंदी लगती है, जिसे **नुक्ता** कहते हैं। इसी प्रकार अंग्रेज़ी के F और Z की ध्वनि का उच्चारण करने के लिए भी इसका प्रयोग होता है; जैसे– ज़रूर, फ़ेल आदि।

वर्ण-विच्छेद

वर्णों के सार्थक मेल से शब्द बनते हैं। शब्द के एक-एक वर्ण को अलग-अलग लिखना **वर्ण-विच्छेद** कहलाता है। वर्ण-विच्छेद के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं–

थरमस	=	थ् + अ + र् + अ + म् + अ + स् + अ
किताब	=	क् + इ + त् + आ + ब् + अ
सुमन	=	स् + उ + म् + अ + न् + अ
कृपालु	=	क् + ऋ + प् + आ + ल् + उ
थैला	=	थ् + ऐ + ल् + आ
कौवा	=	क् + औ + व् + आ
पुनः	=	प् + उ + न् + अः
शर्म	=	श् + अ + र् + म् + अ
ट्रक	=	ट् + र् + अ + क् + अ
पत्र	=	प् + अ + त् + र् + अ
श्रम	=	श् + र् + अ + म् + अ
स्वाद	=	स् + व् + आ + द् + अ
बाज़ार	=	ब् + आ + ज़् + आ + र् + अ
कील	=	क् + ई + ल् + अ
कूलर	=	क् + ऊ + ल् + अ + र् + अ
मेढक	=	म् + ए + ढ् + अ + क् + अ
कोयल	=	क् + ओ + य् + अ + ल् + अ
बंदर	=	ब् + अ + न् + द् + अ + र् + अ
चाँद	=	च् + आँ + द् + अ
ग्रह	=	ग् + र् + अ + ह् + अ
कक्षा	=	क् + अ + क् + ष् + आ
ज्ञानी	=	ज् + ञ् + आ + न् + ई
शरीर	=	श् + अ + र् + ई + र् + अ
बच्चा	=	ब् + अ + च् + च् + आ

Scanned with CamScanner

आओ पाठ दोहराएँ

- सबसे छोटी ध्वनि को **वर्ण** या **अक्षर** कहते हैं।
- वर्णों के क्रमबद्ध समूह को **वर्णमाला** कहते हैं।
- वर्ण के भेद– 1. स्वर 2. व्यंजन
- स्वर के उच्चारण में किसी वर्ण की सहायता नहीं लेनी पड़ती है।
- स्वर के भेद– 1. ह्रस्व स्वर 2. दीर्घ स्वर 3. प्लुत स्वर
- व्यंजन के उच्चारण में स्वर की सहायता लेनी पड़ती है।
- व्यंजन के मुख्य भेद– 1. स्पर्श व्यंजन 2. अंत:स्थ व्यंजन 3. ऊष्म व्यंजन
- अन्य व्यंजन– 1. संयुक्त व्यंजन 2. द्वित्व व्यंजन 3. संयुक्ताक्षर
- शब्द के एक-एक वर्ण को अलग-अलग लिखना **वर्ण-विच्छेद** कहलाता है।

अभ्यास

मौखिक

कौशल-वाचन (बोध, संवाद)

1. अंत:स्थ व्यंजन के नाम बताइए।
2. बच्चो, अपने विद्यालय के नाम का वर्ण-विच्छेद करके बताइए।
3. दीर्घ स्वर और ह्रस्व स्वर में अंतर बताइए।

लिखित

कौशल-लेखन (व्याकरण, शब्दावली, लिखावट)

1. निम्नलिखित शब्दों के उचित वर्ण-विच्छेद में ✓ निशान लगाइए–

(क) बाज़ार	–	ब् + आ + ज़् + आ + र् + अ	◯	ब् + अ + ज़ + अ + र + अ ◯
(ख) लिपि	–	ल् + ई + प् + इ	◯	ल् + इ + प् + इ ◯
(ग) चक्रधर	–	च् + अ + क् + र् + अ + ध् + अ + र् + अ	◯	च् + अ + क् + अ + र् + ध + अ + र् + अ ◯
(घ) कृपा	–	क् + ऋ + प + अ	◯	क् + ऋ + प् + आ ◯
(ङ) चौपाई	–	च् + औ + प् + आ + ई	◯	च् + औ + प् + अ + ई ◯
(च) चिह्न	–	च् + इ + ह् + न् + अ	◯	च् + इ + ह् + अ + न् + अ ◯

2. निम्नलिखित शब्दों में से संयुक्त व्यंजन और द्वित्व व्यंजन वाले शब्दों को अलग-अलग करके लिखिए–

गुब्बारा श्रमिक बच्चा क्षमा पत्रिका कच्चा श्रम लड्डू

संयुक्त व्यंजन – ....

द्वित्व व्यंजन – ....

Scanned with CamScanner

3. निम्नलिखित शब्दों की सहायता से खाली जगह भरिए-

दो ह्रस्व खंड रि नाक संयुक्त मात्रा पच्चीस

(क) ध्वनि के .... नहीं किए जा सकते हैं।

(ख) वर्ण के .... प्रकार होते हैं।

(ग) 'अ' स्वर की कोई .... नहीं होती।

(घ) जिन स्वरों के उच्चारण में सबसे कम समय लगता है, उन्हें .... स्वर कहते हैं।

(ङ) 'ऋ' स्वर का उच्चारण .... की तरह होता है।

(च) अनुस्वार का उच्चारण .... से होता है।

(छ) स्पर्श व्यंजन .... होते हैं।

(ज) एक से अधिक व्यंजनों के मेल से .... व्यंजन बनते हैं।

4. रीमा ने विसर्ग, अनुनासिक और अनुस्वार वाले शब्द आपस में मिला दिए हैं। आप उन्हें अलग-अलग करके लिखिए-

विसर्ग वाले शब्द – ....

अनुनासिक वाले शब्द – ....

अनुस्वार वाले शब्द – ....

5. इनसे बनने वाले संयुक्त वर्ण लिखिए-

क् + श् + अ = ... त् + र् + अ = ... ज् + ञ् + अ = ... श् + र् + अ = ...

6. निम्नलिखित वर्णों के योग से शब्द बनाइए-

(क) म् + ऊ + ल् + ई = ...

(ख) प् + उ + ष् + प् + आ = ...

(ग) प् + अ + त् + त् + आ = ...

(घ) च् + अ + ञ् + च् + अ + ल् + अ = ...

(ङ) श् + र् + अ + म् + इ + क् + अ = ...

7. 'र' के विभिन्न रूपों के आधार पर दो-दो शब्द लिखिए-

(क) र – रतन ....

(ख) ꣲ – धर्म ....

(ग) ्र – प्रकाश ....

(घ) ‸ – राष्ट्र ....

Scanned with CamScanner

8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) स्वर किसे कहते हैं? इनके भेदों के नाम भी लिखिए।

(ख) व्यंजन किसे कहते हैं?

(ग) अनुनासिक तथा अनुस्वार में अंतर स्पष्ट कीजिए।

गतिविधि

रचनात्मक-लेखन (विचार, भाव, लिखावट)

- एक-एक करके सभी बच्चे अपना-अपना नाम बताएँ तथा उनका वर्ण-विच्छेद करें।
- चित्र देखकर लिखिए कि इन्हें हिंदी में क्या कहते हैं-

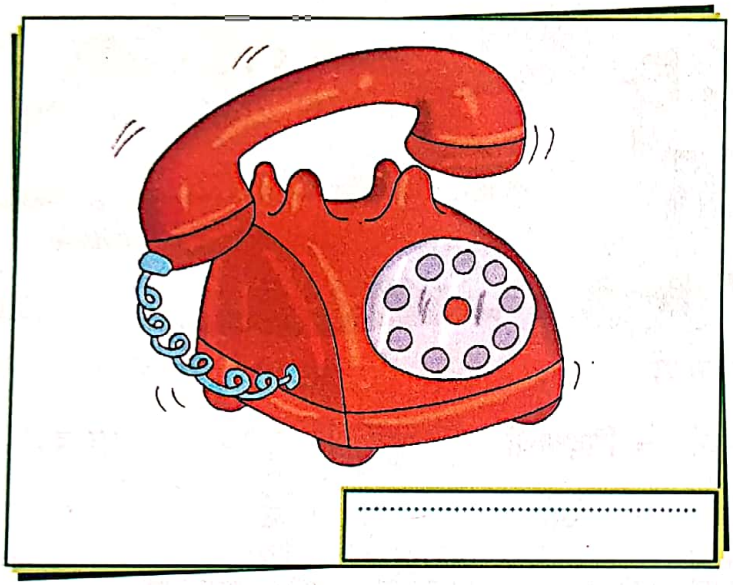

.....

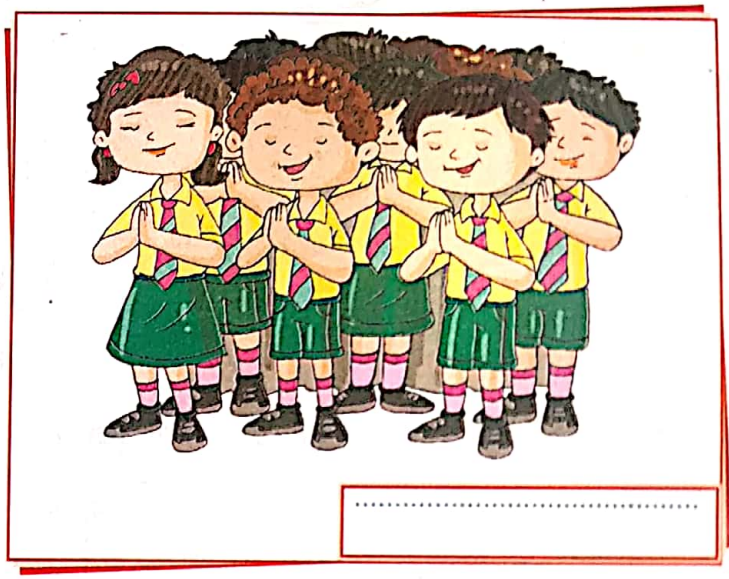

.....

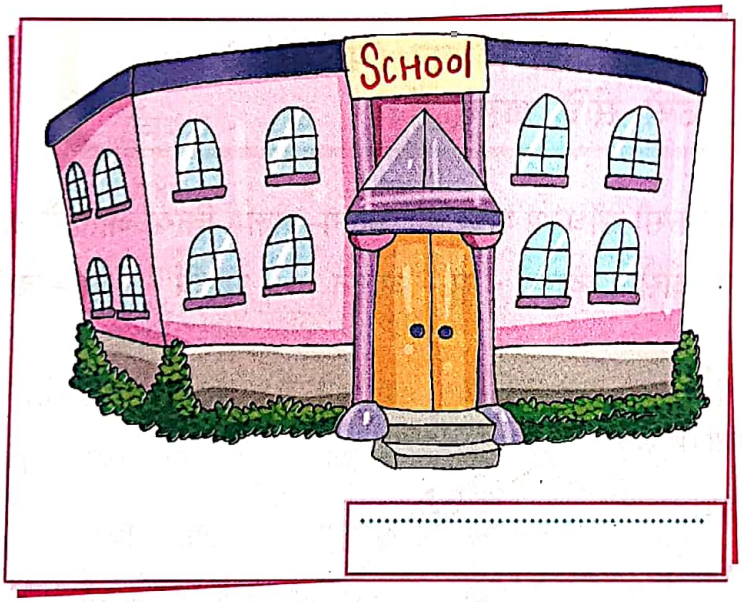

.....

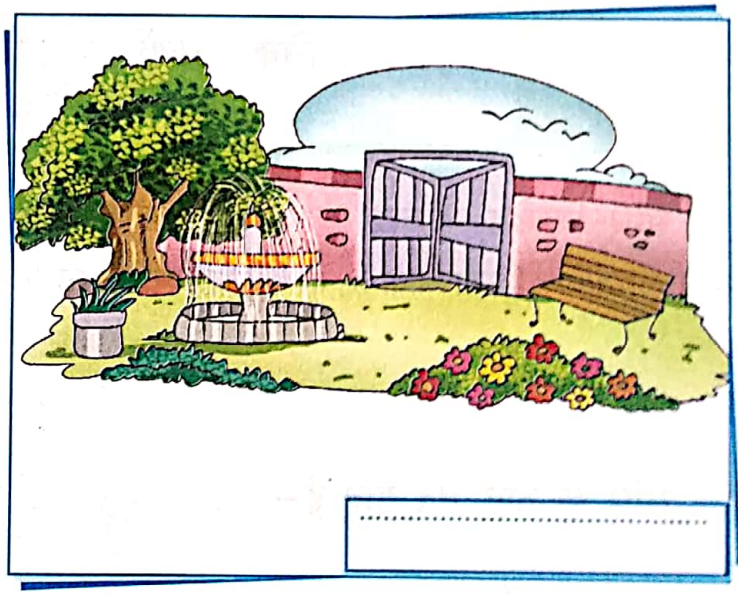

.....

Scanned with CamScanner

(iii) वृद्धि संधि– जब 'अ' या 'आ' के बाद क्रमशः 'ए', 'ऐ' या 'ओ', 'औ' आए, तो दोनों के मेल से क्रमशः 'ऐ' और 'औ' हो जाता है।

पहचान– अ, आ + ए, ऐ = ऐ; अ, आ + ओ, औ = औ

जैसे–	एक + एक	= एकैक	अ + ए = ऐ	परम + ओजस्वी	= परमौजस्वी	अ + ओ	= औ
	तथा + एव	= तथैव	आ + ए = ऐ	महा + ओज	= महौज	आ + ओ	= औ
	मत + ऐक्य	= मतैक्य	अ + ऐ = ऐ	परम + औदार्य	= परमौदार्य	अ + औ	= औ
	महा + ऐश्वर्य	= महैश्वर्य	आ + ऐ = ऐ	महा + औदार्य	= महौदार्य	आ + औ	= औ

(iv) यण संधि– जब 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ', 'ऋ' के बाद भिन्न स्वर आए, तो दोनों के मेल से क्रमशः 'य', 'व', 'र्' हो जाता है।

पहचान– इ, ई + अन्य स्वर = य; उ, ऊ + अन्य स्वर = व; ऋ + अन्य स्वर = र्

जैसे–	अति + अधिक	= अत्यधिक	इ + अ = य	सु + आगत	= स्वागत	उ + आ	= वा
	अति + आचार	= अत्याचार	इ + आ = या	अनु + इति	= अन्विति	उ + इ	= वि
	नदी + आगमन	= नद्यागमन	ई + आ = या	पितृ + अनुमति	= पित्रनुमति	ऋ + अ	= र
	सु + अच्छ	= स्वच्छ	उ + अ = व	मातृ + आज्ञा	= मात्राज्ञा	ऋ + आ	= रा

(v) अयादि संधि– यदि 'ए-ऐ', 'ओ-औ' स्वरों का मेल दूसरे स्वरों से हो, तो दोनों के मेल से क्रमशः अय्, आय्, आयि, अति, अव्, आव् हो जाता है।

जैसे–	ने + अन	= नयन	ए + अ = अय्	पो + अन	= पवन	ओ + अ	= अव्
	गै + अक	= गायक	ऐ + अ = आय्	पो + इत्र	= पवित्र	ओ + इ	= अवि
	गै + इका	= गायिका	ऐ + इ = आयि	पौ + अन	= पावन	औ + अ	= आव्

विशेष

अयादि संधि का प्रयोग संस्कृत में होता है। इन शब्दों को हिंदी में संधियुक्त नहीं माना जाता। ये शब्द केवल व्यवहृत माने जाते हैं।

2. व्यंजन संधि– व्यंजन के बाद स्वर या व्यंजन के आने से जो परिवर्तन होता है, उसे **व्यंजन संधि** कहते हैं; जैसे–

वाक्	+ ईश	= वागीश		सत्	+ बुद्धि	= सद्बुद्धि
क्	+ ई	= गी		त्	+ ब	= द्
व्यंजन	+ स्वर	= व्यंजन		व्यंजन	+ व्यंजन	= व्यंजन
सत्	+ जन	= सज्जन		जगत्	+ नाथ	= जगन्नाथ
त्	+ ज	= ज्ज		त्	+ न	= न्न
व्यंजन	+ व्यंजन	= व्यंजन		व्यंजन	+ व्यंजन	= व्यंजन

Scanned with CamScanner

3. विसर्ग संधि– किसी भी शब्द के अंत में लगे विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में परिवर्तन होता है, उसे **विसर्ग संधि** कहते हैं; जैसे–

तपः + भूमि	=	तपोभूमि	निः + ठुर	=	निष्ठुर
निः + आशा	=	निराशा	निः + चिंत	=	निश्चिंत

व्यंजन संधि और विसर्ग संधि के बारे में आप अगली कक्षा में विस्तारपूर्वक जानेंगे।

आओ पाठ दोहराएँ

कौशल-पठन (उच्चारण, अबोध-भाषण)

- संधि का अर्थ है– मेल या जोड़।
- वर्णों के परस्पर मेल से जो परिवर्तन उत्पन्न होता है, उसे **संधि** कहते हैं।
- संधि को खंडित किया जाता है, तो उसे **संधि-विच्छेद** कहते हैं।
- संधि के तीन भेद होते हैं– 1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि 3. विसर्ग संधि
- स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं– 1. दीर्घ संधि 2. गुण संधि 3. वृद्धि संधि 4. यण संधि 5. अयादि संधि

अभ्यास

मौखिक

कौशल-वाचन (बोध, संवाद

1. संधि का सामान्य अर्थ बताइए।
2. संधि-विच्छेद से आप क्या समझते हैं?
3. दीर्घ संधि की पहचान बताइए।

लिखित

कौशल-लेखन (व्याकरण, शब्दावली, लिखावट

1. निम्नलिखित वाक्यों में ✓ या ✗ का निशान लगाइए–

(क) दो वर्णों के मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे संधि कहते हैं। ◯

(ख) व्यंजन संधि में केवल स्वरों का मेल होता है। ◯

(ग) स्वरों का मेल स्वर संधि कहलाता है। ◯

(घ) स्वर संधि के तीन भेद होते हैं। ◯

Scanned with CamScanner

2. उचित संधि-विच्छेद में ✓ निशान लगाइए-

मतैक्य = मत + ऐक्य	◯	मत + ऐक्य	◯	मत + एक्य	◯
वधूत्सव = वधु + उत्सव	◯	वधू + सव	◯	वधू + उत्सव	◯
विद्यार्थी = विद्या + अर्थी	◯	विद्य + अर्थी	◯	विद्या + आर्थी	◯
सूर्योदय = सूर्य + ऊदय	◯	सूर्य + उदय	◯	सूर्या + उदय	◯
एकैक = एक + एक	◯	एक + एकै	◯	एकै + एक	◯

3. शुद्ध संधि रूप के आगे ✓ निशान लगाइए-

नदी + ईश = नदिश	◯	नदीश	◯
यथा + इष्ट = यथेष्ट	◯	यथैष्ट	◯
कवि + इंद्र = कवींद्र	◯	कविंद्र	◯
राजा + ऋषि = राजार्षि	◯	राजर्षि	◯

4. निम्नलिखित शब्दों की संधि कीजिए-

धर्म + अर्थ =	.....	भोजन + आलय =	.....
सुर + इंद्र =	.....	निः + चय =	.....
वन + औषधि =	.....	मही + इंद्र =	.....
पर + उपकार =	.....	सत् + जन =	.....
लघु + ऊर्जा =	.....	रमा + ईश =	.....

5. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए-

दीपावली –	.....	महौज –	.....
गिरीश –	.....	स्वागत –	.....
नरेश –	.....	पवित्र –	.....
महोत्सव –	.....	परोपकार –	.....

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) संधि किसे कहते हैं?

(ख) संधि के कितने भेद होते हैं? उनके नाम लिखिए।

(ग) संधि-विच्छेद से क्या तात्पर्य है?

7. संधि का अर्थ है- मेल। किसी भी कठिन काम को हम मिलकर आसानी से कर सकते हैं। क्या आप इससे सहमत हैं? अगर हाँ, तो स्पष्ट कीजिए।

मूल्यपरक प्रश्न

Scanned with CamScanner

गतिविधि

- स्वर संधि के भेदों की पहचान कैसे होती है? इस विषय पर चर्चा कीजिए।
- खेल-खेल में–

नीचे दिए गए संधि-विच्छेद की संधि वर्ग-पहेली में से ढूँढ़कर लिखिए–

नि	रा	शा	प	वि	त्र	प
च्छु	त	थै	व	ए	कै	क
र	दी	मा	न	य	न	या
मा	त्रा	ज्ञा	दी	पा	व	ली
र	ज	नी	श	सू	र्या	स्त

1. एक + एक = ...
2. पो + अन = ...
3. पो + इत्र = ...
4. नि: + आशा = ...
5. नि: + ठुर = ...
6. तथा + एव = ...
7. मातृ + आज्ञा = ...
8. नदी + ईश = ...
9. रजनी + ईश = ...
10. सूर्य + अस्त = ...
11. ने + अन = ...
12. दीप + अवली = ...

हँसो और हँसाओ

एक बच्चा कार से स्कूल जा रहा था। अचानक ड्राइवर ने ब्रेक लगा दिया।

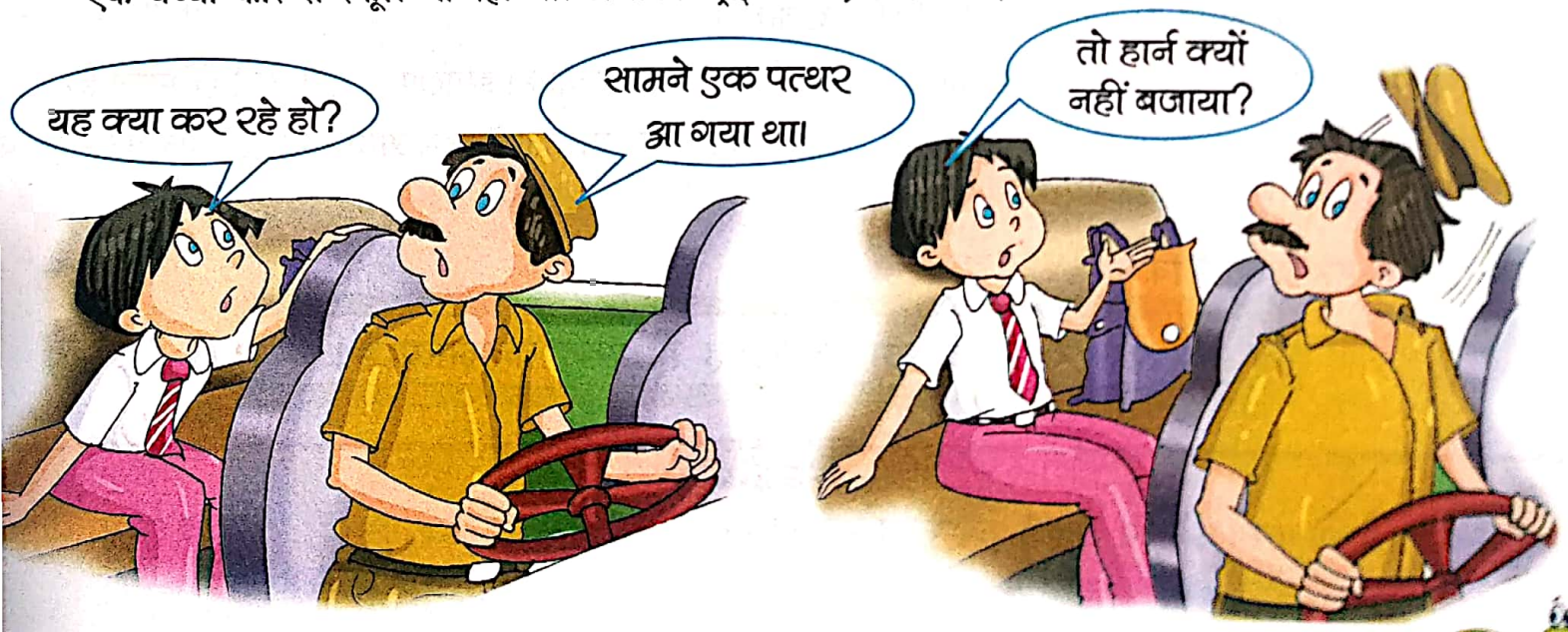

Scanned with CamScanner